॥ श्रीमाणिक्यप्रभुर्विजयते॥

श्रीदत्तजयंती महोत्सव

2023

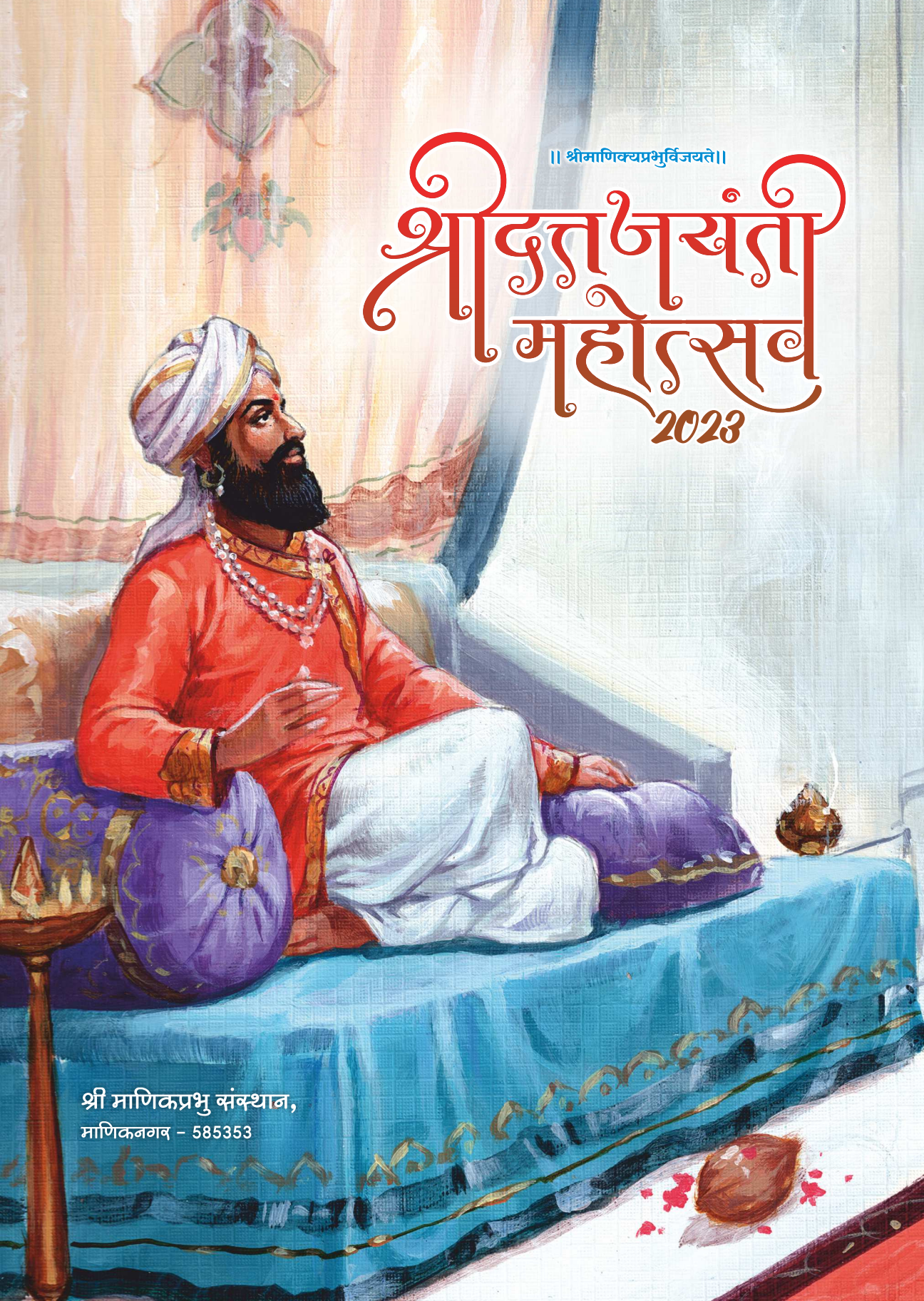

श्री माणिकप्रभु संस्थान,
माणिकनगर - 585353

॥ श्री गुरु अवधूत ॥

श्री ज्ञानराज माणिकप्रभु

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति

शोभननाम संवत्सर 1945
श्री माणिक शक 206

श्री भक्तकार्यकल्पद्रुम गुरुसार्वभौम श्रीमद्राजाधिराज योगिमहाराज त्रिभुवनानन्द अद्वैत अभेद निरञ्जन निर्गुण निरालम्ब परिपूर्ण सदोदित सकलमतस्थापित श्री सद्गुरु माणिकप्रभु महाराज की जय!

श्रीप्रभु की भक्ति अत्यंत दुर्लभ है, क्योंकि प्रभु के प्रति प्रेम उत्पन्न होने के लिए भी प्रभु की कृपा आवश्यक है। इसीलिए श्रीमन्मार्तंड माणिकप्रभु महाराज कहते हैं – "**अरे सत्य हे सत्य सत्य त्रिवाचा। विना भक्ति हा श्री प्रभूलाभ कैंचा। म्हणोनी प्रभूपादपद्मा नमावे। कृपा केलिया तत्पदी लीन व्हावें।।**" (यह त्रिवार सत्य है कि भक्ति के बिना प्रभु प्राप्त नहीं होते, इसलिए प्रभु के चरणों में नमन करना चाहिए और यदि उन्होंने कृपा की तो उनके चरणों में लीन हो जाना चाहिए।) कृपा करना या न करना सर्वथा प्रभु के अधिकारक्षेत्र में है। इसीलिए अवधूत गीता का प्रारंभ भी "**ईश्वरानुग्रहादेव पुंसामद्वैतवासना।**" (ईश्वर के अनुग्रह से ही मनुष्य में अद्वैत के प्रति रुचि जाग्रत होती है।) इस वाक्य से होता है। श्रीमद्भागवत में श्रीशुकदेव कहते हैं "**मुक्तिं ददाति कर्हिचित्स्म न भक्तियोगम्।।**" भगवान् मुक्ति तो सरलता से दे देते हैं किंतु सबको अपना भक्त बनने का अवसर सरलता से नहीं देते। इसी भाव को श्रीजी ने "**नको उदास स्थिति ती मुक्ती। ही माया आम्हां प्रिय भक्ती।।**" (हमें उदासीन अवस्थावाली मुक्ति नहीं चाहिए, हमें तो तुम्हारी प्रेमपूर्ण भक्ति ही प्रिय है।) कहकर भक्ति की श्रेष्ठता एवं दुर्लभता को रेखांकित किया है। हम भक्तों पर प्रभु की अहैतुकी कृपा है, इसीलिए वे अपने श्रीचरणों की सेवा का दुर्लभ अवसर हमें प्रदान कर हमें सतत आनंदित किया करते हैं। इसीलिए श्रीजी कहते हैं "**देउनि पदसेवा निजसदनी आनंदें नांदविसी।।**" (अपने चरणों की सेवा का अवसर देकर तुम हमें सतत आनंदित करते हो।)

श्रीप्रभु की तन-मन-धनपूर्वक अनन्यभाव से सेवा और उस सेवा के द्वारा उनकी कृपा प्राप्त हो जाने पर ही भक्तियोग सिद्ध होगा जो मुक्ति से भी अधिक दुर्लभ है। उस सेवा के लिए, कृपाप्राप्ति और तत् द्वारा भक्तियोग की सिद्धि के लिए श्रीजयंती महोत्सव से अधिक उपयुक्त शुभमुहूर्त हो ही नहीं सकता। अतएव सूचित करते हुए आनंद होता है कि, **श्रीप्रभु का महामांगल्यप्रद 206वाँ श्रीजयंत्युत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी, शनिवार 23 दिसंबर 2023 से मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा बुधवार 27 दिसंबर 2023 तक** अत्यंत वैभवपूर्वक सुसंपन्न हो रहा है। अस्तु इस महन्मंगल अवसर पर आप सभी सकुटुंब सपरिवार स्वाश्रितजनसमेत शुभागमन कर श्रीदर्शन तीर्थप्रसाद सेवन व भजनानंद क्रीड़ा से हमें आनंदित करें।

आशीर्वाद

श्री दत्तजयंती महोत्सव 2023 – कार्यक्रम

गुरुवार 21-12-2023

तीर्थस्नान व योगदंड पूजन

मध्याह्न	02:00	तीर्थ स्नान
मध्याह्न	03:00	योगदंड पूजन
रात्रि	08:30	महाप्रसाद

रविवार 24-12-2023

श्री प्रभु द्वादशी

प्रात:	10:00	संगम स्नान
प्रात:	11:00	महारुद्राभिषेक व जप
मध्याह्न	02:00	राजोपचार महापूजा
सायं	07:00	प्रदोषपूजा
रात्रि	08:30	महाप्रसाद

शुक्रवार 22-12-2023

सकलदेवता निमंत्रण

प्रात:	10:00	गणपति पूजन व चंडीपाठ
सायं	06:00	सकलदेवता निमंत्रण
रात्रि	08:30	महाप्रसाद

शनिवार 23-12-2023

158वी श्री प्रभु पुण्यतिथि

प्रात:	06:49	सुप्रभात सेवा
प्रात:	07:30	महारुद्राभिषेक व जप
प्रात:	10:30	राजोपचार महापूजा
मध्याह्न	03:00	आराधना
सायं	07:00	प्रदोषपूजा
रात्रि	08:30	महाप्रसाद

सोमवार 25-12-2023

दक्षिणा दरबार/गुरुपूजन

प्रात:	09:00	महारुद्राभिषेक व जप
मध्याह्न	01:30	दक्षिणा दरबार व गुरु पूजन
सायं	07:00	प्रदोषपूजा
रात्रि	08:30	महाप्रसाद

मंगलवार 26-12-2023

206वी श्रीप्रभु जयंती

प्रात:	09:00	महारुद्राभिषेक व जप
मध्याह्न	01:00	दर्शन एवं पाद्यपूजा
सायं	07:00	राजोपचार महापूजा,
रात्रि	09:00	महाप्रसाद

बुधवार 27-12-2023

श्री प्रभु दरबार

रात्रि	11:30	प्रभु दरबार आरंभ
रात्रि	12:00	प्रभु जन्मोत्सव
रात्रि	12:30	संगीत सभा

अपरिहार्य परिस्थिति में उपर्युक्त कार्यक्रमों में परिवर्तन की संभावना है।

datta loka

The Garden of Divinity at Maniknagar

Visitors to Maniknagar will now be greeted by 'Datta Loka', a thoughtfully designed garden inside the boundaries of Prabhu Mandir that will enhance the exquisite beauty of the location. Tiled walkways, immaculate lawns, gazebos made of Jaipur-Karauli pink stone, and a magnificently crafted 18-foot-tall idol of Bhagwan Shri Dattatreya overlooking the area, along with His varied manifestations, will not only set the right mood for a temple visit, but will also completely transport the pilgrims to another world of Divine Grace.